North Asian International Research Journal of Multidisciplinary

IRJIF IMPACT FACTOR:6.019

ISSN: 2454-2326 Vol.10, Issue, 8 August-2024

Index Copernicus Value: 58.12 Indian Citation Index Thomson Reuters ID: S-8304-2016

NAIRJC A Peer Reviewed Refereed International Journal

सामाजिक जीवन पर संगीत का प्रभाव

डॉ. मृणाल प्रभाकरराव कडू

सहायक प्राध्यापक (संगीत विभाग)

श्री शिवाजी कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय

E-mail – kadumrunal@gmail.com

मो. नं. ८८३०८३३०३०

सारांश :-

संगीत मानव के भावजगत से जुड़ा एक अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है। समाज की सांस्कृतिक , मानसिक, नैतिक और भावनात्मक प्रवृत्तियों पर संगीत का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। विभिन्न परंपराओं , उत्सवों, धर्मों, भाषाओं और पीढ़ियों को एक साथ जोड़कर समाज में एकता स्थापित करने की क्षमता संगीत में निहित है। फिल्म संगीत , लोकसंगीत, भजन-कीर्तन, देशभक्ति गीत तथा आधुनिक पॉप और डिजिटल संगीत— इन सभी माध्यमों से समाज की विचारधारा , मूल्य-प्रणाली और सामाजिक चेतना का निर्माण होता है। जन-जागरूकता , सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक संरक्षण, भावनात्मक अभिव्यक्ति और मानसिक स्वास्थ्य— इन सभी क्षेत्रों में संगीत का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रौद्योगिकी के विकास के साथ संगीत अधिक सुलभ हो गया है और इसका युवापीढ़ी की जीवनशैली पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। कभी-कभी गलत अर्थों में प्रस्तुत गीत-संगीत या अवांछित सामग्री नकारात्मक प्रभाव भी डाल सकती है ; परंतु मूल्य-आधारित और सकारात्मक संगीत समाज में संतुलन और सकारात्मकता बढ़ाने में सहायक होता है।

समग्र रूप से देखा जाए तो संगीत समाज का प्रतिबिंब होने के साथ-साथ समाज को दिशा देने वाली शक्ति भी है। संगीत के माध्यम से सामाजिक परिवर्तनों की धाराएँ स्पष्ट होती हैं और सामाजिक जीवन अधिक समृद्ध बनता है।

प्रस्तावना :-

मानव इतिहास में संगीत केवल कलात्मक अभिव्यक्ति का साधन नहीं रहा , बल्कि सामाजिक संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। सुख-दुःख, उत्सव-समारोह, श्रद्धा-भावना, एकता की अनुभूति या सामाजिक संदेश— हर स्तर पर संगीत ने समाज को

आकार दिया है। आज भी बदलती जीवनशैली , तकनीकी युग और विविध सांस्कृतिक प्रभावों के बीच संगीत मानव के विचारों, भावनाओं, व्यवहार और समाज की सामूहिक दिशा को प्रभावित करता है।

संगीत समाज को एकजुट करने , मूल्यों और नैतिकता को स्थापित करने , जन-जागरूकता फैलाने और मानसिक स्वास्थ्य सुधारने का प्रभावी माध्यम है। लोककला , शास्त्रीय परंपरा, फिल्म संगीत और आधुनिक पॉप संस्कृति— इन सभी के माध्यम से संगीत सामाजिक चेतना को बढ़ाता है और संस्कृति को नई दिशा देता है। इसलिए सामाजिक जीवन पर संगीत का प्रभाव आज के समय में अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। इसके अध्ययन से संगीत के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों तथा सामाजिक परिवर्तन में उसकी भूमिका का व्यापक विश्लेषण संभव होता है।

KEYWORDS:-

भावनात्मक अभिव्यक्ति, सांस्कृतिक एकात्मता, जन-जागरूकता, मूल्य-प्रणाली, सामाजिक संदेश, आधुनिकीकरण, युवापीढ़ी

अनुसंधान की आवश्यकता :-

संगीत और समाज के बीच परस्पर संबंध अनेक स्तरों पर दिखाई देता है। इस संबंध की गहन और वैज्ञानिक विवेचना के लिए शोध आवश्यक है। आज समाज तीव्र गति से बदल रहा है— तकनीक , सोशल मीडिया, वैश्वीकरण और जीवनशैली में परिवर्तन— इन सभी का संगीत पर और संगीत के माध्यम से समाज पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है।

संगीत मनोदशा, तनाव, एकाग्रता, भावनात्मक संतुलन और व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करता है। इन प्रभावों के वैज्ञानिक विश्लेषण हेतु अनुसंधान अत्यंत आवश्यक है।

अनुसंधान पद्धति :-

इस विषय से संबंधित पुस्तकों , पत्रिकाओं, सामाहिकों, जर्नल्स और इंटरनेट से द्वितीयक सामग्री एकत्र कर उसका समुचित विश्लेषण किया गया है। इस द्वितीयक सामग्री को शोध-पत्र में सम्मिलित किया गया है।

समाज क्या है? समाज की उत्पत्ति एवं महत्व :-

समाज मानवों के पारस्परिक संबंधों पर आधारित एक जीवंत , गतिशील और संगठित समूह है। समान संस्कृति , परंपरा, मूल्य-प्रणाली और नियमों को मानने वाले लोग मिलकर समाज का निर्माण करते हैं। समाज केवल व्यक्तियों का भौतिक समूह नहीं है, बल्कि उनके व्यवहार, विचारधारा, भावनात्मक संबंध, आचार-संहिता और जीवनशैली का समन्वित स्वरूप है।

मानव स्वभाव से सामाजिक प्राणी है। सुरक्षा, भावनात्मक सहयोग और परस्पर निर्भरता की आवश्यकता ने समूह जीवन को जन्म दिया। समय के साथ नियम, परंपराएँ और आचार-विचार विकसित हुए और समाज का निर्माण हुआ। समाज के बिना व्यक्ति का अस्तित्व अपूर्ण है। व्यक्तित्व विकास , संस्कार, शिक्षा, नैतिकता, सांस्कृतिक पहचान और सुरक्षा— ये सभी समाज से प्राप्त होते हैं।

संगीत की उत्पत्ति और विकास :-

संगीत मानव संस्कृति की सबसे प्राचीन और सार्वभौमिक कला है। इसकी उत्पत्ति मानवीय भावनात्मक आवश्यकताओं से हुई और सामाजिक, जैविक व तकनीकी प्रक्रियाओं के माध्यम से इसका विकास हुआ।

प्राचीन काल की धार्मिक और सामाजिक आवश्यकताएँ , मध्ययुगीन शास्त्रीय अवधारणाएँ और आधुनिक काल की तकनीक तथा वैश्वीकरण— ये सभी संगीत विकास के महत्वपूर्ण चरण हैं। आज संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं , बल्कि सामाजिक संवाद, पहचान, उपचार और उद्योग का माध्यम भी बन गया है।

संगीत और समाज का परस्पर संबंध :-

संगीत और समाज एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। संगीत समाज का प्रतिबिंब भी है और समाज को दिशा देने वाला माध्यम भी।

1. संगीत समाज का प्रतिबिंब है :-

लोकगीतों में जनजीवन , भजन-कीर्तन में धार्मिकता और फिल्म संगीत में सामाजिक संघर्ष , प्रेम तथा पारिवारिक मूल्य दिखाई देते हैं।

2. संगीत समाज को आकार देता है :-

सामाजिक मूल्य, नैतिकता और जागरूकता फैलाने में संगीत प्रभावी भूमिका निभाता है। देशभक्ति गीत एकता और राष्ट्रीय भावना को प्रबल करते हैं।

3. सांस्कृतिक एकता का माध्यम :-

संगीत भाषा, धर्म और क्षेत्र की सीमाओं से परे जाकर लोगों को जोड़ता है। फ्यूजन संगीत सांस्कृतिक सामंजस्य को बढ़ावा देता है।

4. भावनात्मक और सामाजिक जुड़ाव :-

संगीत आनंद बढ़ाता है, दुःख में सांत्वना देता है और समूह गायन सामाजिक बंधन मजबूत करता है।

5. सामाजिक परिवर्तन की शक्ति :-

स्वतंत्रता आंदोलन और सामाजिक आंदोलनों में संगीत प्रेरणास्रोत रहा है।

6. तकनीक और आर्थिक कारकों का प्रभाव :-

डिजिटल माध्यमों और सोशल मीडिया ने संगीत को अधिक सुलभ और लोकतांत्रिक बनाया है।

7. मूल्य-प्रणाली और संस्कार :-

प्रार्थना गीत और संस्कार गीत नैतिक मूल्यों को मजबूत करते हैं।

निष्कर्ष :-

संगीत केवल कला नहीं, बल्कि समाज की भावनाओं, संस्कृति और मानवीय व्यवहार को प्रभावित करने वाला सशक्त माध्यम है। सामाजिक संबंधों को मजबूत करने, सांस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित करने और भावनात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करने में संगीत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संगीत और समाज के बीच द्विमार्गी संबंध है— संगीत समाज को गढ़ता है और समाज संगीत को। इसलिए बदलते सामाजिक ढाँचे में संगीत का महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है और यह मानव जीवन का अभिन्न अंग बना हुआ है।

संदर्भ ग्रंथसूची :-

1) भारतीय संगीत कला – पं. विनायकराव पटवर्धन, महाराष्ट्र राज्य साहित्य एवं संस्कृति मंडल, मुंबई
2) भारतीय संगीत में समाजशास्त्र – डॉ. अशोक राणे, प्रज्ञा प्रकाशन, पुणे
3) भारतीय संगीत इतिहास एवं सिद्धांत – डॉ. प्रेमलता शर्मा, भारतीय संगीत परिषद (ICCR), नई दिल्ली
4) भारतीय संस्कृति कोश – डॉ. राजाराम जोशी, साहित्य मंदिर प्रकाशन, पुणे
5) लोकसंगीत और संस्कृति – डॉ. रमेश पाटील, नूतन प्रकाशन, पुणे
6) मराठी संगीत परंपरा – डॉ. शरद पोंक्षे, मौजे प्रकाशन, मुंबई